मंडाण

पोथीमाळ रा पुहुप

मायड़ रै हेज जैड़ी हेजळी, काळजै हिंवळास देवण वाळी मायड़ भासा राजस्थानी री बात करतां कंठां रै मारग अंतस तांई मीठास पूगै।

राजस्थानी भासा जुगां जूनी अर घणी सिमरथ है। राजस्थानी री अखूट साहित्य-संपदा, भासा री व्याकरण, उणरी न्यारी-न्यारी विसेसतावां, सबद भंडार जिणमें दो लाख नैड़ा सबदां रा अरथ है। अरथ ई नीं, अेक सबद रा अनेक अरथ अर अेक अरथ वाळा घणा ई सबद इणरी अखूट थाती है। सात करोड़ सूं बेसी तौ राजस्थान री जनसंख्या है, इणरै बारै ई पूरा भारत में जठै-तठै राजस्थानी बोलण वाळा रैवै, राजस्थान अर आसै-पासै जठै आ भासा बोलीजै, उण रा भूखेत्रां नैं मिळावां तौ राजस्थानी विसाल भूखेत्र में बोलीजण वाळी भासा है। जूनी मुडिया लिपि रै पछै देवनागरी लिपि इणरै कनै है। सब सूं मोटी बात जिकी इण भासा नैं सांवठी करै वा है इणरी बोलियां अर उपबोलियां। मारवाड़ी, मेवाड़ी, हाड़ोती, ढूंढाड़ी, मेवाती, वागड़ी, सेखावाटी, तोरावाटी, गोडवाड़ी आद इणरी बोलियां अर उपबोलियां है। राजस्थानी में आ कैवत ई चावी है कै 'बारा कोसां बोली बदळै', पण आं बोलियां में बरतीजण वाळा आंचळिक सबद राजस्थानी री सबद-संपदा नैं बधावै। भासाविदां रौ अैड़ौ मानणौ है कै जिण भासा में जित्ती ज्यादा बोलियां होवै वा भासा बित्ती ई सिमरथ अर सिमरध बणै। राजस्थानी अेक स्वतंत्र अर संपन्न भासा है।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड रा पाठ्यक्रम में राजस्थानी पढाई जावै, इणरौ म्हांनै अंजस है। बारवीं कक्षा वास्तै 'साहित्य-सुजस' (भाग-2) में राजस्थानी भासा री टाळवीं रचनावां लिरीजी है। आं रचनावां सूं राजस्थानी साहित्य री कूंत तौ करीजै ई है, साथै ई आंनैं पढण वाळा टाबरां रै चरित्र नैं ऊजळौ बणावण अर संवारण रौ काम ई अै रचनावां करैला।

टाबरपणै में नानी-दादी सूं जिकी बातां सुणता हा उणां री ओळूं अंतस रै किणी खूणै में अजेस ई लुक्योड़ी बैठी है। 'वैताल पचीसी' री बातां हितोपदेस अर पंचतंत्र री कथावां जैड़ी है। विक्रम-वैताल री कथावां सूं कुण अणजाण है। आं कथावां सूं विद्यार्थियां रौ चिंतन खिमतावान बणै। इणी दीठ सूं जूनौ गद्य अर पद्य इण पोथी में राखीज्यौ है। राजस्थानी रै सांवठै साहित्य भंडार सूं कीं टाळवीं रचनावां इण पाठ्यपोथी में लिरीजी है। राजस्थानी साहित्य रै आदि, मध्य अर आधुनिक काळ सूं विद्यार्थी रूबरू व्है सकै, इण वास्तै पंचतंत्र, हितोपदेस जैड़ी कथावां में 'वैताल पचीसी' री कथावां आपरी न्यारी ठौड़ राखै। 'भणिया पण गुणिया कोनी' कहावत नैं चरितार्थ करण वाळी 'वैताल पचीसी री अकवीसमी कथा' जीवण रौ गुर सिखावै। 'चौबोली री बात' अर 'मारवाड़ रा परगना री विगत' राजस्थानी रै प्राचीन गद्य री ओळखाण करावै।

आज रै बगत में मिटता मानवी मूल्य, जीवन-आदर्श, टूटता परिवार अर अेकलपै मिनख नैं हेत अर अपणायत री दरकार है। भाई-बैन रा संबंधां री लूंठी बानगी है— 'हर्ष-जीण री लोकगाथा'। आ गाथा मानवी संवेदनावां नैं जंझेड़ देवै। राजस्थानी-साहित्य में त्याग, समरपण, बळिदान री कथावां चावी है, जकी अठै री संस्कृति री ओळखाण है। वीर सांस्कृतिक परंपरा अर स्वातंत्र्य भावना री निकेवळी रचनावां में 'अचलदास खीची री वचनिका' जूनै गद्य रौ नामी दाखलौ है।

विकसाव रै मारग माथै केई पड़ाव पार करती राजस्थानी रै आधुनिक गद्य री सगळी विधावां में सिरजण री साख भरती रचनावां में 'कनक-सुंदर' राजस्थानी रौ पैलौ उपन्यास है। इणरौ कीं अंस पोथी में राखीज्यौ है। पाठ्यपोथी में कहाणियां, लघुकथावां, निबंध, रेखाचित्राम, व्यंग्य, गद्यकाव्य आद सगळी विधावां लेवण रा जतन करीज्या है।

आज रै भोगवादी जुग में मिनख खुद मिनख सूं आंतरै जीवण लागौ है। वौ आज री भागदौड़ वाळी जीवाजूण में गम्योड़ौ, खुद चमगूंगौ होयोड़ौ रात-दिन आफळीजतौ रैवै, जाणै किणी गम्योड़ी चीज नैं सोधतौ व्है। खुद रै माथै गाडां-गाडां भार ऊंचायोड़ौ बेवूलौ होयोड़ौ फिरै। वौ आपरा गाढा संबंधां री साख नैं ई बचायनै नीं राख सक्यौ। आज ठौड़-ठौड़ बण्योड़ा वृद्धाश्रम, अनाथालय इण बात री पिछाण करावै कै आधुनिक दीठ सूं तौ आपां आगै बधता जावां हां, पण मूळ सूं कटता जा रैया हां। जड़ सूखगी तौ रूंख जावैला, पछै डाळियां अर पानड़ां रौ लेखौ करणौ मूरखता है। आपां री जड़ां है आपणा माईत, आपणा बडेरा अर पान-फूल है आपणा टाबर। परिवार री इकाई सूं इज समाज बणै अर समाज तद ई रातौ-मातौ बण सकै जद आपां में संस्कार जीवता रैवैला।

आज रै आपा-धापी रै जुग में मिनख खुद नैं मोटौ समझै। आपारा अहम नैं राखण वास्तै वौ दूजां नैं कीड़ा-मकोड़ा समझण लाग जावै। अहम रौ राकस इत्तौ बळवान बण जावै कै समाज में विणास रौ कारण बणै। जबरां री रोज दिवाळी व्है। समाज री विसंगतियां, विडरूपतावां सूं अरू-बरू करावण वाळी रचनावां इण पोथी में राखीजी है। मानखो सहज-सरल भासा में समझ जावै तौ आछौ, नीं तौ व्यंग्य-बाण सूं उणनैं सावचेत करणौ साहित्यकार रौ फरज बणै। बात नैं मांडनै कैवणी अेक कला है, तौ थोड़ै में घणौ कैवण री हटोटी ई साहित्य में है। 'छोटी तुक रौ दोहलौ, सब कवितन को भूप' ज्यूं 'गळगचिया' अर 'नुकती-दाणा' ई पढण में सौरा, मनोरंजक होवण रै साथै जीवण-दरसण री पिछाण करावण वाळा है। 'गागर में सागर' री खिमता आं मांय है। प्रेमचंद रै आलेख 'साहित्य का उद्देश्य' रौ उल्थौ 'साहित्य रौ मकसद' राजस्थानी में अनुसिरजण री साख नैं सवाई करै।

राजस्थानी रै प्राचीन पद्य साहित्य में वीर रस री रचनावां री आपरी परंपरा रैयी है। इण परंपरा में 'रणमल्ल छंद' वीर रसात्मक अैतिहासिक खंडकाव्य है। औ अेक चरित-काव्य ई है। रणमल्ल री वीरता अर दरप राजस्थानी वीर संस्कृति री ओळखाण करावै।

राजस्थानी संस्कृति में वीरता, सिणगार, भक्ति रा सुर अेकण सागै गूंजिया। वीर भोग्या वसुंधरा में जठै मरण-तिंवार मनाईज्या— 'मरणा नूं मंगळ गिणै, समर चढै मुख नूर' अर 'चूंडावत मांगी सेनाणी, सिर काट दे दियो क्षत्राणी'। अेक दूजै रूप में यूं कहीजै—

सत री सहनाणी चही, समर सलूंबर धीस।
चूड़ामण मेली सिया, उण धण मेल्यौ सीस।।

वीरता में त्याग अर बळिदान रा भाव है। पण जठै प्रेम होवै बठै समरपण-भाव रौ होवणौ ई घणौ जरूरी है। जुद्धां रा रीझाळू प्रीत निभावण में ई पाछ नीं राखता। जे कर्तव्य रै आडी प्रीत आयगी तौ पाबूजी राठौड़ रै ज्यूं ब्याव रा तोरण सूं सदैव रण-तौरण वाल्हौ हौ वीरां नैं—

परणी छोडी बिलखती, माथै जस रौ मोड़।
बणियौ गायां बाहरू, रंग पाबू राठौड़।।

प्रेम सिणगार अर उणमें ई विरह सिणगार में मानवी संवेदनावां उफणन लागै। जूना काव्य जिका प्रेमाख्यान ई है। इणां में लोक-सैली री घण महताऊ कृतियां है— 'ढोला-मारू रा दूहा' अर 'वीसलदेव रास'। नायिका रौ विरह वरणन, मानसिक दसावां, आपरी संवेदनावां नैं पंखेरुवां साथै बांटणी अर पंखेरुवां री पीड़ नैं

आत्मसात करणी, बारहमासा वरणन सूं नायिका रै विरह सूं उपजी वेदना रौ मरमपरसी वरणन आं दोनूं काव्यां में होयौ है।

मिनख रै हिरदै में प्रेम-तत्त्व रौ होवणौ घणौ जरूरी है। प्रेम रै ओळै-दोळै इज सगळा भाव फिरै। देसप्रेम है तौ वीरता रौ भाव अपणै आप आय जावैला। प्रेम तत्त्व है तौ भगवान रै प्रति प्रेम होवण सूं ई भक्ति री भावना जागै। भक्ति में विस्वास अर आस्था जुड़्योड़ी है। सक्ति री भक्ति रै रूप में 'देवियांण' जठै सक्ति री सरब व्यापकता नैं बतावै, बठै ई जीवण-आदरसां रा रुखाळा श्रीराम रै चरित्र नैं उजागर करण वाळौ महाकाव्य 'राम रासौ' है। समाज में जीवण-आदरसां नैं जींवता राखण सारू राम जैड़ा चरित्रां री दरकार है। कृष्ण भक्ति काव्य में समान बाई रौ काव्य महिला-सिरजण री साख भरै। जुग बदळै ज्यूं जुग रा मानदंड ई बदळै, थितियां ई बदळै अर हरेक जुग में कवि या साहित्यकार आपरौ फरज निभावण सारू समाज नैं चेतावतौ दीखै। साहित्यकार जुगद्रस्टा अर स्रस्टा दोनूं है। जैड़ौ देखै वैड़ौ ई लिखै। अैड़ा ई जुगबोध करावण वाळा कवियां में संधिकाळ रा कवि बांकीदास आसिया रौ नांव आवै। आप अंग्रेजी सत्ता रौ विरोध करतां उणरै खिलाफ डिंगळ गीत 'आयौ इंगरेज मुलक रै ऊपर' रचनै जनमानस नैं सावचेत कर्‌यौ। जातीय अेकता ई इण गीत में निजर आवै। जिकौ वीर रजपूती निभावै वौ राजपूत है। वरण व्यवस्था में क्षत्रियां नैं देस री रिछ्या रौ भार सूंपीज्यौ, पण बांकीदासजी हर मिनख नैं देस-रिछ्या रौ भार सूंपणी चावै।

देस आजाद होयां पछै ई मानखै रै साथै न्याय होवतां नीं देखनै कवियां रा मन घणा कळपता। वै साची बात कैवण में पाछ नीं राखी। ऊमरदान लाळस खंडन परंपरा री सरुआत करतां सामाजिक बुरायां रौ जिकौ खुलासौ करै, वौ राजस्थानी काव्य पेटै उण बगत में साव नूंवौ दीसै। नसा-मुगती रै वास्तै कवि रा जतन अैळा नीं जावै, इण वास्तै वौ भांत-भांत सूं मानखै नैं उबारण खातर थुड़ै। समाज रौ पतन होवतां कवि कीकर देख सकै। आज रा मोट्यारां वास्तै औ पाठ महताऊ है। जनता नैं उणरा अधिकार मिळै, न्याय मिळै, भासा रै साथै अन्याय अर उणरै आघमान में जिकी पीड़ कवि रै हियै में है वा हरेक भासा-भासी रै हिरदै री पीड़ होवणी चाईजै। आपरी भासा नैं मान मिळै, पिछाण मिळै, इण वास्तै 'मरण-पंथ रा पंथी' बण त्याग, समरपण करण री जरूरत है।

रेवतदान चारण री कविता 'लिछमी' करसै अर मजूर री हिमायत करै अर अंत में उणां री सावचेती अर जागरण री बात ई कवि कर देवै। अधिकार कोई देवै कोनी, उणनैं खोसनै लेवणौ पड़ै। इणीज भाव री आ रचना सोसित-वरग अर सोसक-वरग रै बिचाळै ऊभी लिछमीरूपी अधिकार संपदा जनमानस नैं सूंपण री कविता है।

समाज में आपरी जीवाजूण नैं जींवता, जीवन रूपी मांचै री वदाण नैं ताणण वाळां री संख्या घणी है। जीवण रा अभाव, समाज री विसंगतियां बदळती वैचारिक मान्यतावां नैं साम्हीं राखै— ज्योतिपुंज री रचनावां। आधुनिक कविता में रूपगत, सिल्पगत नूंवा प्रयोग आप कर्‌या है। बोलण अर लिखण सारू भासा अेक ठोस माध्यम है। जद भासा ई नीं होवैला तौ सोचौ कै आपां रौ कांई आपौ रैवैला। आज तौ गूंगा-बोळां रै कनै ई भासा है, जिणसूं वै आपरा विचार राख सकै। आपां साजा-ताजा होवता थकां ई बिना भासा नैं अंगेजियां गूंगा हां अर उणरी (भासा री) पीड़ नैं बिना सुण्यां बोळा हां। अैड़ी बातां कवि अर साहित्यकार ई समझ सकै। चंद्रप्रकाश देवल री कवितावां 'भासा सूं अरदास' अर 'ओळबौ' भासा री इणीज पीड़ नैं प्रगटावै।

साहित्यकारां रै लेखन-कला री बात करतां बार लागै, राजस्थान री इण माटी अर माटी रा जायोड़ा रचनाकारां री खिमता नैं घणा रंग।

-डॉ. (श्रीमती) प्रकाश अमरावत